अतीत की ओर...

प्रमिला

माँ से मातृभाषा तक...

वर्ष : 01, अंक : 04, अगस्त – सितंबर 2023

मूल्य : 20 रुपए | पृष्ठ : 4

ई – पत्रिका उपलब्ध है : www.rachnakosh.in

मेरे रूह को याद करके कोई तहज़ीब निकाला जाए,
लोग भटक रहे हैं इस महफ़िल के अब उन्हें संभाला जाए,,,
- अलबेला

सरोज कु. मिश्रा (अनजाना)

भोजपुरी फिल्म के पहिलका विश्वकर्मा

भोजपुरी सिनेमा के इतिहास के जब भी बात कईल जाई त ओकरा बुलन्द इमारत में मिल के रूप में अभिनेता, लेखक, निर्देशक नज़ीर हुसैन के कभी भुलावल नइखे जा सकत । नज़ीर हुसैन हिंदी सिनेमा में आपन अच्छा स्थान बना के रखले रहनी लेकिन जब भारत के प्रथम राष्ट्रपति से उहा के पहिलका मुलाकात भइल, तब ई विमर्श भइल की भोजपुरी खातिर भी कुछ करे के चाही । ओहिजा से नज़ीर हुसैन के प्रेरणा मिलल आ उहा के इरादा कइनी की अब हम भोजपुरी भाषा में चलचित्र के निर्माण करेम। भोजपुरी के दर्शक लोग आपन भाषा में सिनेमा के आनन्द उठाई । नज़ीर हुसैन भोजपुरी में कहानी तैयार कइनी। निर्देशक बिमल राय से उहा के अच्छा सम्बंध रहे। नज़ीर हुसैन जब बिमल राय के कहानी सुनइनी तब बिमल राय आपन इक्षा जाहिर करते कहनी की ई कहानी रउरा हमरा के दे दीं, हम दोसरा भाषा में ई कहानी पर सिनेमा बनाएम, भोजपुरी भाषा में सिनेमा बनावे के नइखी चाहत। नज़ीर हुसैन आपन इरादा बदले के ना रहलन।

उहा के बिमल राय से संबंध के कुर्बानी दे के भी भोजपुरी के इतिहास रचे के जाऊन संकल्प कईले रहनी ओकरा के पूरा करे के कोशिश में जुट गईनी। कहानी पर आगे काम करे खातिर उहा के निर्माता के जरूरत रहे। वक्त के साथ सब चीज पूरा भइल आ भोजपुरी के पहिलका फिल्म "गंगा मईया तोहे पियरी चढ़इबो" बन के तैयार भईल। फिल्म के दर्शक द्वारा खूब सोहरत मिलल। फिल्म के गीत बहुत पसंद कईल गइल आ संगीतकर चित्रगुप्त जी के काफी सराहना भईल । एह फिल्म के साथ नजीर हुसैन साहब के जवन एगो प्रयास शुरू भईल उ आगे बढ़े लागल। नज़ीर हुसैन आपन सिनेमा के सफर में बहुतेरों फिल्म के निर्माण कइनी।

लागी नाही छूटे राम, रूस गईले सईया हमार जईसन सुपरहिट फिल्म के सफलता के पीछे नज़ीर साहब के हाथ रहे। लागी नाही छूटे राम फिल्म के गीत हर वर्ग पसंद करेला। लाली लाली होठवा से बरसे ला ललाइया हो..., जा रे जारे सुगना जा रे..., लागी नाही छूटे राम फिल्म के द्वारा नज़ीर साहब समाज के जवलंत समस्या के भी देखावे के प्रयास कइनी। छूआ - छूत, शराब के खिलाफ, नशा के खिलाफ फिल्म के माध्यम से संदेश देवे के प्रयास भइल रहे। रोमांटिक के साथ एगो बढ़िया मनोरंजक फिल्म होखे के नाते ई फिल्म के दर्शक से खूब प्यार मिलल।

भोजपुरी से जुडल आउर चर्चा अगिला अंक में...

आसान शब्दों में बड़ी बात कहना आसान नहीं होता

हिन्दी दिवस विशेष

संपादक की कलम से...

एक द्वंद है, प्राचीन और असंख्य के बीच, पुरातन और वैश्विक के बीच, आदिम और दीप्तिमान के बीच। भाषा की अनुक्रमणिका पर जब नज़र फेरते हैं, तब संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाएं उल्लेखनीय दिखाई पड़ती है। असमिया, बंगाली, गुजराती, कनड़, कश्मीरी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, उर्दू, संस्कृत, हिंदी, तमिल इत्यादि। संस्कृत और तमिल के नाम जहां समृद्ध और सबसे प्राचीन भाषा का सरताज है वहीं हिंदी भाषा का इतिहास एक हज़ार साल पुराना पता चलता है। अतीत के पन्नों में दिव्य वाणी को समेटे इन तमाम भाषाओं के बोल - चाल में उपयोग का किस्सा कुछ और ही बयां करती है। 2011 में हुए सर्वे में ये पता चलता है कि देश की 120 करोड़ जनसंख्या का 0.02 प्रतिशत लोग ही संस्कृत बोलते हैं। साल 2010 में, उत्तराखंड संस्कृत को अपनी दूसरी आधिकारिक भाषा के रूप में सूचीबद्ध करने वाला भारत का पहला राज्य बना था। 2011 में जारी रिपोर्ट के मुताबिक करीब 5.7 प्रतिशत भारतीय तमिल और 43. 63 प्रतिशत भारतीय हिंदी भाषा बोलते हैं। बावजूद इसके हिंदी अपने आप को राष्ट्रभाषा के रूप में विराजमान होने की राह देख रही है, ये सपना कब साकार होगा ! ये ख़ुद में एक सवाल है ? मशहूर गीतकार समीर 'अनजान' लिखते हैं कि आसान शब्दों में बड़ी बात कहना आसान नहीं होता। हिंदी की तासीर भी कुछ यही बयां करती है। हिंदी भाषा ने ख़ुद को आम आदमी की भाषा के रूप में प्रदर्शित किया है। हिंदी के विश्वव्यापी बनने की कहानी शुरू होती है भारतेन्दु हरिश्चंद्र से। यहां ये ज़िक्र इसलिए भी क्योंकि हिंदी और हिंदी साहित्य के बीच प्रेम ठीक वैसा ही है जैसे पानी में मछली का जीवित रहना। भारतेंदु हरिश्चंद्र हिंदी साहित्य के शीश कहे जाते हैं। उन्होंने हिंदी साहित्य को वो वृक्ष दिया, जिसकी छाया में आज हिंदी साहित्य फलफूल रहा है। उन्होंने हिंदी साहित्य को वो आलोक दिया जिसे हिंदी भाषी अनादिकाल तक याद रखेंगे। एक ओर जहां भारतेंदु जी ने हिंदी कविता को राष्ट्र चेतना और देशोद्धार की पवित्र चेतना से सुसज्जित किया है। वहीं दूसरी ओर हिंदी गद्द साहित्य को समृद्ध बनाने का प्रयास किया।

भारतेंदु जी ने हिंदी में कई नाटक, कहानी, जीवनी, निबंध इत्यादि विविध गद्द विधाओं का उद्गम किया। सत्य हरिश्चन्द्र, चन्द्रावली, भारतदुर्दशा आदि नाटक, सुलोचना, मदालसा, लीलावती आदि निबंध का सृजन उनकी कलम की पहचान स्थापित करती है। इस अलंकृत विरासत को अपनी शब्दों की वेग से रामधारी सिंह दिनकर, हरिवंशराय बच्चन सलीके कवि और लेखकों ने हिंदी को विश्वतर पर ले जाने में कोई कसर नहीं छोड़ा। वर्तमान परिदृश्य में हिंदी समूचे विश्व में आकर्षण का केंद्र बनती जा रही है। एक रिसर्च के मुताबिक 140 से अधिक विश्विद्यालय में हिंदी का पठन - पाठन होना गर्व की अनुभूति प्रदान करने जैसा है। हिंदी के स्वर्णिम इतिहास और संघर्ष की कहानी के बीच उर्दू की तहज़ीब और तबस्सुम को भाषा की इस पठकथा से अछूता नहीं छोड़ा जा सकता। तब मशहूर कवि कुमार विश्वास की लिखी पंक्तियां याद आती हैं कि " ये उर्दू बज़्म है और मैं तो हिंदी माँ का जाया हूं, जुबानें मुल्क़ की बहनें हैं ये पैग़ाम लाया हूँ, मुझे दुगनी मोहब्बत से सुनो उर्दू ज़बां वालों, मैं अपनी माँ का बेटा हूँ, मैं घर मौसी के आया हूँ..."।

अतीत की ओर...

इतिहास के पन्नों में...

1770 : डेनमार्क में प्रेस की स्वतंत्रता को मान्यता मिली।

1998 : गूगल डॉट कॉम डोमेन नेम के रूप में रजिस्टर हुआ।

नई सुबह का इंतजार है...

रितेश आदर्श

सुरेश अपने परिवार के साथ उत्तर प्रदेश से वापस परदेस यानी कि दूसरे राज्य लौट रहा है। त्रिनिदाद, फिजी जैसे कई देशों में भोजपुरी बोली जिसे आमतौर पर बिहारी भाषा समझा जाता है, बोली जाती है। सुरेश की मातृभाषा भोजपुरी है। इस वजह से उसे अक्सर लोग आसानी से पहचान जाते हैं। बिहार संपर्क क्रांति एक्सप्रेस में बैठा यह क्रांतिकारी दिल्ली जा रहा है। रात में बार बार उठ उठ कर आसमान निहारने लगता है। उसे नई सुबह का इंतजार है। उस नई सुबह का जिसका लाल किले पर शायद वादा किया गया था। सुबह पांच बजे जब वह दिल्ली स्टेशन पर उतरेगा तब एक नई सुबह होगी। पिछले एक हफ्ते से बच्चों ने किताबें नहीं खोली।

सुषमा बच्चों को स्कूल छोड़ने के बाद सुनैना मैडम के यहां आज से काम करना शुरू कर देगी। सुधीर तो साक्षात विश्वकर्मा है, लॉन्ग बूट को सीमेंट में सने देखना, एक हफ्ता लंबा इंतजार अब खत्म होने को है। इस लंबे सफर के चक्कर में सुरेश ने चेन्नई-मुंबई का मैच मिस कर दिया था। रिप्ले देखने के बाद सुरेश सीधे फेसबुक की ओर भागा। उसने फेसबुक पर मोनू को टैग करते हुए एक पोस्ट लिखा, "का हो! तोहार मुंबई त गड़बड़ा गइल आज, धोनी के आगे कइसे टिक पाई कोई।"

आधे घंटे के अंदर ही मोनू ने उस पोस्ट के नीचे कमेंट किया, 'ई मैच रउरा जीत गइनी , बधाई, बाकी लास्ट वाला हमनी जीतब, जान जाई। इन दोनों के किए इस पोस्ट ने दिल्ली, कलकत्ता, लखनऊ, हैदराबाद और गुजरात हो चुके बिहार के कई हिस्सों को अखाड़े में पटक दिया।

सब अपने अपने टीम का झंडा ऊंचा करने लगे। कुछ देर के लिए लोग भूल गए कि जिस राज्य के नाम की टीम को सीने से लगाए वह घूम रहे हैं, उस राज्य में एक मानसिकता बिहारी को गाली का पर्यायवाची बनाने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगाती रहती है।

मोनू और सुरेश एक साथ ही बड़े हुए थे। सोलह बरस की उमर में बल्ले और गेंद को छोड़ फावड़ा और टोकरी उठाने निकल पड़े। तब से अब तक उस मोनू और सुरेश की तलाश जारी है। क्रिकेट के इस लीग ने एक फ्लैशबैक दिया है। सुरेश और मोनू दोनों ख्यालों में यूपी लौट रहे हैं। घड़ी उल्टी चलने लगी है। 32 साल की उमर....25...16... अरे मोनू! आज फिर अपोजिट टीम में, हमारे खिलाफ! तुमको देख लेंगे।

शेष अगले अंक में...

भोजपुरी विशेष : (ग़ज़ल)

हर बात में बसल उऽ जजबात के खुसबू
इयाद आइल पहिला सौगात के खुसबू

बा मदहोस हवा एकरा ना कुछ पता
का होला आखिरी मुलकात के खुसबू

छू के अंग - अंग बा पूरा सिहऽरा गईल
हिया में बसल केहू कऽ साथ के खुसबू

आदमी भलहि बस गइल शहर में बाकिर
मन के भावल गाँव- देहात के खुसबू ।।

- सोनू किशोर

रेखाचित्र : भाग 4

आर्टिस्ट का नाम :
रश्मि तिवारी (न्यू हाउसिंग कॉलोनी, छपरा)

आर्टिस्ट का नाम :
पंकज कुमार (प्रभुनाथ नगर)

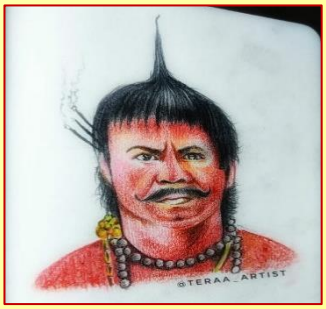

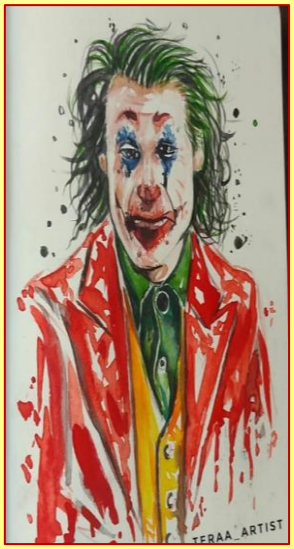

अतीत की ओर...

इतिहास के पन्नों में...

1971 : कतर को स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

2013 : माइक्रोसॉफ्ट ने 7.2 अरब में नोकिया को खरीदा।

गाँव – तब, अब और आगे...

प्रेम शंकर

भारतीय जीवन में गाँव का महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय सामाजिक संरचनाओ में आदिकाल से हि गाँव महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसलिए भारत को गाँव की भूमि कहा गया है। इसकी अधिकांश आबादी गाँव में ही रहती है। 2011 में हुए जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या का 70% भाग गाँव में रहती है। अगर हम बात करें समय के साथ गाँव के संरचना में बदलाव की, तो हम देखते हैं की आदिकाल से ही हमारा गाँव कमोबेश आत्मनिर्भर इकाइयों के रूप में व परिपूर्ण नज़र आते हैं।

जहाँ गाँव में हर एक काम के लिए कम से कम एक परिवार (वंशानुगत) होता था। उन्हें किसी भी कार्य के लिए बाहरी लोगों की आवश्यकता पड़ती नहीं दिखाई देती है। हालांकि बाहरी आक्रमणकारियों, मुगलों इत्यादि के आने के बाद व्यपार के लिए बाहरी लोगों का आगमण हुआ दिखाई पड़ता है।

Photo Credit : Gaon Connection

जबकि इसके बुनियादी ढांचे में बदलाव अंग्रेजों के आगमन के साथ शुरू होता है। जहां उनके वंशानुगत कार्य व न्याय प्रणाली आदि में ढांचागत बदलाव नज़र आते हैं, जो की हमारे गाँव पर बड़ा ही गहरा प्रभाव डालता है। सबसे ज्यादा प्रभाव उनके राजनीतिक प्रणाली का रहा, जिसमे गाँव के प्रधान, पंच या दोनों मिल कर फैसला देते थे। अंग्रेज़ अपने साथ न्यायिक व्यवस्था लेकर आएं, जिसमे कोर्ट, जज व अदालतें फैसला देती थीं। देश की आज़ादी के पहले जहाँ गाँव की हालत खराब और गरीबी मे डूबी नज़र आती थी वहीं आज़ादी के बाद गाँव की ढांचागत रूप में बदलाव नज़र आता प्रतीत होता है। भारत को पूर्ण स्वराज मिलने के बाद, एक बार फिर से गाँव के स्वशासन को पंचायती राज व्यवस्था के द्वारा वापस लाने की कोशिश की गई। इसके सफलता, असफलता व कठिनाइयों पर हम बाद में बात करेंगे। हालांकि अंग्रेजों द्वारा लायी गई न्यायिक शक्तियों व केंद्रीयकृत प्रक्रियाओं से आए अप्रिय परिणामों के बाद एक अच्छे बदलाव की शुरुआत थी।

Photo Credit : Gaon Connection

इसके बाद देश व राज्य की बदलती राजनीतिक व आर्थिक परिस्थितियाँ धीरे - धीरे गाँव के परिदृश्य में बदलाव लाती है। हम देखते हैं की अशिक्षा व गरीबी के स्तर में जरूर कमी आई है।

शेष अगले अंक में...

भोजपुरी विशेष

बात में बात निकल त गजबे भईल।
उनकर दिल के बात निकलल, त गजबे भईल।।

आँख में उ उतरल रले कहियों।
आज आँख से बह गइले त गजबे भईल।

साथ रहें के त उनका रहे बहुत दूर तक।
बात पलमें भुलाइले त गजबे भईल।।

चाह के उ ना चाह सकले हमके।
चाहे के जब चहले त गजबे भईल।।

पाँव मिलल बा त चले के परबे करी।
पाँव जब चले लागल त गजबे भईल।।

एकगो रहे बटोही खड़ा छाँव में
धूप जब अँचरा पसरलख त गजबे भईल।

एक दिन मिली मंजिल चलत-चलत।
अनजाना ई रास्ता कहल त गजबे भईल।

- अनजाना

भोजपुरी चइता : बीत गईल सँउसे फगुनवां हो रामा

बीत गइले सँउसे फगुनवां हो रामा
पिया नाहीं अइलें...

भोरे - भोरे कुहुकेले कोइलरि सवतिया
छने- छने इयाद आवे उनके सुरतिया।
झर - झर झरेला नयनवां हो रामा
पिया नाहीं अइलें ....

नसे - नसे घोरे नासा चइती बयरिया
झूमि - झूमि घुंघरू बजावेले रहरिया।
गम - गम गमके सिवनवां हो रामा
पिया नाहीं अइलें....

जरि जाला जिया देखि सूनी सेजरिया
लागे भकसावन अंगना - दुअरिया।
काटे धावे खेत - खरिहनवां हो रामा....
पिया नाहीं अइलें .....

सहकल सरेहिया भइल उतपाती
मिल गइल मटिया में जोगवल थाती।
छछनल मोरे अरमनवाँ हो रामा
पिया नाहीं अइलें ...

बीत गइले सँउसे फगुनवां हो रामा ...
पिया नाहीं अइलें...

- डॉ. ज्ञानेश्वर 'गुंजन'

साहित्य मासिक

घनश्याम

श्याम से सावन तक...

वर्ष : 01, अंक : 04, अगस्त – सितंबर 2023

मूल्य : 20 रुपए

ई – पत्रिका उपलब्ध है : www.rachnakosh.in

तुम मोहब्बत में दुनिया से डरती हो,
अरे मोहब्बत करने वालों से तो दुनिया डरती है,,,

- अलबेला

ग़ज़ल

कदम को रोक किसी का इक सवाल दिया
एक उड़ते परिंदे को पिंजरे में डाल दिया

कुछ तो काम आई इश्क ए बर्बाद ज़िंदगी
बुजुर्गों ने नसीहत में मेरा मिसाल दिया

वो नहीं आने वाला लौट कर ये जानते हुए
इंतज़ार में उनके गुज़ार कई साल दिया

बचपन वाला खुशियों का अब आँगन कहा
बटवारों ने मासूम दिलों पे खींच दिवाल दिया

पहला इश्क था छपरा और तूने ए ज़िंदगी
एक रोज़ वहां से भी निकाल दिया

- अनीश कुमार 'देव'

" रातें "

शहर के तमाम रातों की
इक राज़ बतानी है।
तुम गलत ना समझो, मुझे
भी तो अपनी लाज़ बचानी है ।।

क्रूरता है यहाँ, हैवानियत की हद हैं रातें।
चौपट राजा के, अंधेर नगरी में,
किसी हब्राब के जानिब मस्त है रातें ।।
न कोई लोक - लाज, ना ग़ैरत है यहाँ।
किसी बच्चे के माफ़िक मसूम्त है रातें ।।

मुझे डर है कहीं बिखर ना जाऊँ,
इस कदर उजर हैं रातें।
कोई सोर - गुल नहीं, सिर्फ चीखें सुनाई देती है
बदहवाश कोई गुड़िया कहीं से, भागती दिखाई देती है ।।

ये रातें हैं इतनी मदमस्त खुद में,
इन्हें तो सिर्फ अपनी चांद दिखाई देती है।
कुछ और गुजरती है रात तो,
किसी रावण की अट्टहास सुनाई देती है,
किसी द्रोपदी की लूटती इज्जत, किन्हीं
कौरवो की उल्लास दिखाई देती है ।।

थोड़ी और गुजरती है रात तो
सुबह की लालीमा छाती रहती है।
कुत्ते भौक रहें होतें हैं, लुटेरो की
महफिल से कोई बेगम घर जाने को होती है।

सुबह की चलन यह कितनी बदसलूकी है,
कोई सुरैया, किसी महफिल में जाने को,
अगली रात होने के इंतज़ार में,
अभी से बैठे गयी होती है ।।

- प्रेम शंकर

ग़ज़ल

तीर लगता नहीं निशाने पर।
और इल्ज़ाम है ज़माने पर।

दिल को इतना बिगाड़ रक्खा है,
मानता ही नहीं मनाने पर।

अक्स तेरा उभर के आता है,
नक़्श कुछ भी कहीं बनाने पर।

सात जन्मों का सौदा कर बैठी,
दो अदद चूड़ियाँ दिलाने पर।

ज़हन पर बेबसी यूं हावी है,
और गिरता गया उठाने पर।

बारहा कुछ नये की चाहत है,
मोह छूटे नहीं पुराने पर।

एक चेहरे पे लुट गया है पुंज,
अब कहाँ होश है ठिकाने पर।

- प्रखार पुंज

अर्जुन

अर्जुन हैं, असमंजस में तात्!
मै न अस्त्र उठाऊगाँ
हत्ताश होकर गिरा है,
योध्दा रण मे मैं कैसे टिक पाऊगाँ।
प्रतिव्दन्दी है रिश्ते मेरे
मैं रिश्तों की बलि न चढाऊगाँ
गुरु वध पाप है, गुरु वध कलंक न, मैं कमाऊगाँ।
जाने दो जो जाएगा सर्वस
मैं न अब हक का हाथ बढाऊँगा
धरा की किसी कोने मे,
पाण्डव कुटी बनाऊँगा
मैं जीता तो भी हारा, मैं हारा तो भी हारा,
भ्राता संग हस्तिनापुर ही छोड़ जाऊँगा।
अर्जुन है असमंजस मे, तात्!
मैं न अस्त्र ऊठाऊँगा
हत्ताश होकर गिरा है योध्दा
रण में मैं कैसे टिक पाऊँगा।
कृष्ण ने तब मौन तोड़ा
हे पार्थ! तुम क्यों मार्ग से भटकते हो
विपक्षी बनकर खड़े हो जाए रण मे
उसे तुम अपना क्यों कहते हो

निःसंकोच उतरो रण मे
यह युगों-युगों का युद्ध होगा
एक पग भूमि के लिए,
भाई-भाई के विरुद्ध होगा।

यह संताप छोड़ो पार्थ
धर्मराज का धर्म युद्ध होगा।
वीरों के तरकश से, तीरों का बर्षात
होगा।
छलेगा उससे अहंकार और घमण्ड का नाश होगा
अधर्म से लड़ने वाले विव्दानों का भी संहार होगा

- रानी कुमारी

नए कलमकार की स्याही से...

तलब है तुम्हे पाने की, तुम मिल भी गए
तो डर भी है तुम्हे खोने का, समझ में
नहीं आ रहा की तलब गलत थी या
तुम्हारा मिलना गलत था,,,

- ओम वैभव शुक्ला

प्रधान संपादक : अभिनंदन द्विवेदी | सहायक संपादक : ओम वैभव शुक्ला, अलबेला, चित्रांश श्रीवास्तव, कुलदीप तिवारी | संपादक मंडल : विक्की, कुश श्रीवास्तव, अंकित शर्मा | संपादकीय कार्यालय : पिठौरी, बनियापुर, सारण – 841301, बिहार | अपनी रचना हमें भेजे : rachnakosh.editor@gmail.com